

"APPENDIX NO.II."

Release executed by Gaigabeti ji, Janakivahuji and Vrajabhushana.  
(From Venmada Vol. I. No. 3)

श्रीरूपवत् १७३७ वर्षे प्रथम आसो सुद ३ बार रेती की शामलसुत विजयनगर जोग ला. श्री ऐटी श्री गंगाप्रेटीज तथा श्री जनकीवहुज तथा श्री व्रिजभुषण जल सेवा २ घेर तथा श्री पादकाञ्जी सेवा माटे वेवाहु छतो रे अमो अमारा कुली रीत समझ छिंगी, रेनी विवाह के श्री वालकुषुभी सेवा ए छमो आपी तथा श्रीपादकाञ्जी एक श्री अचारण्डी सेवा श्री गंगाप्रेटीज पासे अ। रंगा रहे तरी ल्ये सुधी श्री गंगाप्रेटी पासे रहे पछी श्री पादकाञ्जी एक श्री अचारण्डी आपीगी, तथा द्वारकानाथजु अमारा छे रे अमो पासे रहे, रे अहु अहु रीते समझातुं हुं अमारे क्षी वातनी विवाह नथी. छ्वरामदावा विजय आजदीन पहेली रे विवाह माटे लाउ तथा कागजपत्र भोरो भोरी के पासेदी नीक्केले २६ छे. थाज दीन सुधी क्षी वातनु लेहु देहु नही.

१. अन्त	मतु	१ लंग	साम
ऐटी- गंगाप्रेटीज मतु		१. अतर शाम श्री इलाणुरायजु सुत श्री उरीरायजु	
जनकीवहुज मतु		१. सुदरदास वेणीलाल धर्मी ७४२	
मतु उपर लाउ रे सही.		१. वनमालीदास.	
१ ला. श्री व्रिजभुषण उपर लाउ सही.		१. गर्धी उरीदास तलकादास साम १. २१मार्जन सुत विठ्ठल साम १. लगवानजु जनणी साम धारीगी	
		७४२	
		१. इलाणुदास भोरारु साम उपर लाउ ग्रमाणे करी छे.	
		१. सास उद्दिंग जगज्जवनदास.	